10 जीने की कला

मौलाना अबुल कलाम 'आज़ाद'
(जन्म : सन् 1885 ई., निधन : सन् 1958 ई.)

जानेमाने शिक्षाविद्, चिंतक मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, आज़ाद स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्षामंत्री थे । वे प्रखर विद्वान एवं अरबी-फारसी के ज्ञाता थे । साहित्य के क्षेत्र में आप ललित और चिंतनात्मक निबंध लेखक के रूप में जाने जाते हैं । आपकी दृष्टि से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है जिसे अन्य सजीवों से अलग तरह से रहना चाहिए ।

जीने की कला एक आवश्यक कला है । व्यक्ति को इस कला से भलीभाँति परिचित होना चाहिए । उसे चाहिए कि जीवन को भलीभाँति जीए । मरते-मरते नहीं जीना चाहिए और मृत्यु के बारे में कभी सोचना ही नहीं चाहिए । हमारे जीवन में हरियाली की आवश्यकता है, सूखेपन या बंजरता की नहीं । खिले हुए पुष्प, बहते झरने, गाते पंछी और बहती हवा आदि को देख मनुष्य प्रसन्नता का अनुभव कर सकता है ।

वस्तुत: हमारे धर्म, दर्शन और अध्यात्म के गहन दर्शन ने मनुष्य को अनावश्यक गंभीर और कृत्रिम बना दिया है । उसे सहज नहीं रहने दिया है । जीवन का लक्ष्य आनंद की प्राप्ति करना होता है, जिसे सिद्ध करने में ही लगे रहना चाहिए ।

लोग सदा इस खोज में लगे रहते हैं कि जीवन को बड़े-बड़े कामों के लिये काम में लाएँ । मगर वे यह नहीं जानते, कि यहाँ सबसे बड़ा काम खुद जीवन है, अर्थात् जीवन को हँसी-खुशी में काट देना । यहाँ इससे ज्यादा सरल काम कोई नहीं है कि मर जाइए और इससे ज्यादा विकट काम कोई नहीं है कि जीते रहिए । जिसने यह मुश्किल हल कर ली, उसने जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी सुलझा ली ।

मेरा ख्याल है, प्राचीन चीनियों ने जीवन की समस्या को ठीक समझा था । एक प्राचीन चीनी वाक्य में पूछा गया है - दुनियाँ में सबसे बुद्धिमान आदमी कौन है ? फिर जवाब दिया है - जो सबसे ज्यादा खुश रहता है । इससे हम चीनियों का जीवन-संबंधी दृष्टिकोण समझ सकते हैं ।

अगर आपने संसार की हर स्थिति में प्रसन्न रहने की कला सीख ली है, तो विश्वास कीजिए, कि आपने जीवन का सबसे महान काम सीख लिया है । अब इसके बाद इस सवाल की जरूरत ही नहीं रही, आपने और क्या-क्या सीखा है ? खुद भी खुश रहिए और दूसरों से भी कहते रहिए, कि अपने चेहरे उदास न होने दें ।

आजकल के एक फ्रांसीसी लेखक आंद्री गीद (Andre Gide) की एक बात मुझे बहुत भाई, जो उसने अपनी आप-बीती में लिखी है - 'खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं है, यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है ।' मतलब यह कि हमारे व्यक्तिगत जीवन का प्रभाव हमीं तक सीमित नहीं रहता, वह दूसरों को भी पकड़ता है । या यूँ कहिए कि हमारे सुख-दु:ख की छूत दूसरों को भी लगती है । इसलिए हमारा कर्तव्य है कि न आप उदास हों, न दूसरों को उदास करें ।

हमारा जीवन एक शीशाघर है । यहाँ हर चेहरे का प्रतिबिंब एक ही समय में सैकड़ों शीशों पर पड़ता है । अगर एक चेहरे पर भी छाया आ गई, तो वह छाया सैकड़ों चेहरों पर छा जायगी । हममें से किसी आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद नहीं है । हर आदमी पूर्ण संग्रह का अंश है । दरिया में एक लहर अकेली उठती है, मगर उस एक ही लहर से अनगिनत लहरें बन जाती हैं । यहाँ हमारी कोई बात भी सिर्फ हमारी नहीं है, हम जो कुछ अपने लिए करते हैं, उसमें भी दूसरों का भाग होता है । हमारी कोई खुशी भी हमें खुश नहीं कर सकेगी, अगर हमारे चारों तरफ उदास चेहरे जमा हो जाएँ । हम खुद खुश रहकर दूसरों को खुश करते हैं और दूसरों को देखकर खुद-खुश होने लगते हैं ।

यह अजीब बात है कि धर्म, फिलासफी और सदाचार तीनों ने जीवन की समस्या हल करनी चाही और तीनों में खुद जीवन के विरुद्ध भाव उत्पन्न हो गया । इसीलिए लोग समझते हैं कि कोई आदमी जितना ज्यादा बुझा दिल और सूखा चेहरा लेकर फिरे, वह उतना ही ज्यादा धार्मिक, फिलासफर और सदाचारी है । मानो ज्ञान और पवित्रता दोनों के लिए दु:ख का जीवन अनिवार्य हो गया ।

यह माना, कि जिन गुत्थियों को दुनिया सैकड़ों वर्षों के सोच-विचार से भी नहीं सुलझा सकी, आज हम उन्हें हँसी-ठठ्ठे के चार शब्दों से हल नहीं कर सकते । मगर यह तो मानना पड़ेगा, कि यहाँ सत्य की ओर से आँखें बंद नहीं की जा सकतीं । एक भक्त, एक साधु, एक फिलासफर का सूखा चेहरा बनाकर हम उस चित्र में नहीं खप सकते, जो प्रकृति के विश्वकर्मा हाथों ने यहाँ खींच दिया है । जिस चित्र में सूरज का चमकता हुआ मस्तक, चाँद का हँसता हुआ चेहरा, तारों की झलमलाती हुई आँखें, पेड़ों का नृत्य, पंछियों का संगीत, बहते हुए पानी की तरंगें, खिलते हुए

फूलों की बहारें अपनी शोभा दिखा रही हैं, वहाँ हम एक बुझे-हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ स्थान नहीं पा सकते । प्रकृति की इस रूप-सभा में तो वही जीवन सज सकता है, जो अपने वक्ष में दमकता हुआ दिल और चेहरे पर चमकती हुई आँखें रखता हो और जो चांदनी में चाँद की तरह निखरकर, तारों की छाँह में तारों की तरह चमककर, फूलों की क्यारी में फूलों की तरह खिलकर अपना स्थान ले सकता हो ।

शब्दार्थ

गुत्थी उलझन, समस्या **उत्तरदायित्व** जिम्मेदारी **शीशाघर** ऐसा कक्ष जिसमें दीवारें शीशे की बनी हो, वह घर जिसकी दीवारों तथा छत पर शीशे लगे हों **जायदाद** संपत्ति **हँसी-ठट्ठे** हँसी-मजाक **विकट** मुश्किल **फिलासफी** दर्शनशास्त्र **झलमलाती** प्रकाशित, चमकती **बुझे हुए** मुरझाये हुए **वक्ष** छाती

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर उत्तर लिखिए :

(1) मनुष्य जीवन को किस काम में लाया जाना चाहिए ?
(अ) जीवन को समझने (ब) हँसी-खुशी में बिताने (क) सरल काम करने (ड) विकट काम करने

(2) आदमी ज्यादा धार्मिक, फिलासफर और सदाचारी लगता है, ऐसा लोग कब समझते हैं ?
(अ) जब वह बुझेदिल हो । (ब) जब वह प्रसन्न हो ।
(क) जब वह धर्म की बात करते हो । (ड) जब वह पवित्र हो ।

(3) लेखक के मतानुसार जीवन की समस्याओं को किस प्रजा ने ठीक से समझा था ?
(अ) प्राचीन भारतीय (ब) अमेरिकन (क) चीनी (ड) आधुनिक भारतीय

2. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) जीवन की सबसे बड़ी गुत्थी कैसे सुलझायी जाय ?
(2) जीवन की समस्या किसने ठीक समझा था ?
(3) दुनिया में सबसे बड़ा बुद्धिमान कौन है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के दो-तीन वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) प्रसन्न रहने की कला क्या है ?
(2) 'खुश रहना केवल एक जरूरत नहीं, यह एक नैतिक उत्तरदायित्व भी है'- कैसे ?
(3) हमारी खुशी हमें कब खुश नहीं कर सकती ?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तार उत्तर लिखिए :

(1) आदमी का जीवन उसकी अपनी व्यक्तिगत जायदाद क्यों नहीं है ?
(2) हम बुझे हुए दिल और सूखे हुए चेहरे के साथ कहाँ स्थान नहीं प्राप्त कर सकते ?

5. निम्नलिखित शब्दों से कर्तृवाचक संज्ञा बनाइए :

कला, नीति, बात, दिल, सदाचार, संगीत, नृत्य

6. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण बनाइए :

संसार, विश्वास, प्रतिबिंब, प्रकृति, समय, अंश

7. निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए :

प्रसन्न, सरल, बड़ा, खुश, उदास, बहुत, आदमी

योग्यता-विस्तार

- 'जीवन जीने की कला' विषय पर वक्तृत्व स्पर्धा का आयोजन कीजिए ।
- 'जीवन में आनंद का महत्त्व' विषय पर लेखन कार्य करवाइए ।
- 'आनंद' फिल्म दर्शाने का आयोजन कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'प्रसन्नता ईश्वर का दूसरा स्वरूप है ।' इस विषय पर कक्षा में चर्चा का आयोजन कीजिए ।
- प्रसन्नता, जीवन जीने की कला, सदाचार, धर्म, दर्शन... आदि शीर्षक अंतर्गत विद्वानों के विचार, सूक्तियाँ एवं लेखों का संकलन करने का कार्य छात्रों को दीजिए ।

●